माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्डरी परीक्षा

2009

केन्द्र क्रमांक की सील: 12023

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड | 0 | 5 | 1 | परीक्षा का विषय Gen-Hindi
2. परीक्षा का माध्यम Hindi परीक्षा की दिनांक 20-03-09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें — कोड: U-2002 सेट: [illegible]

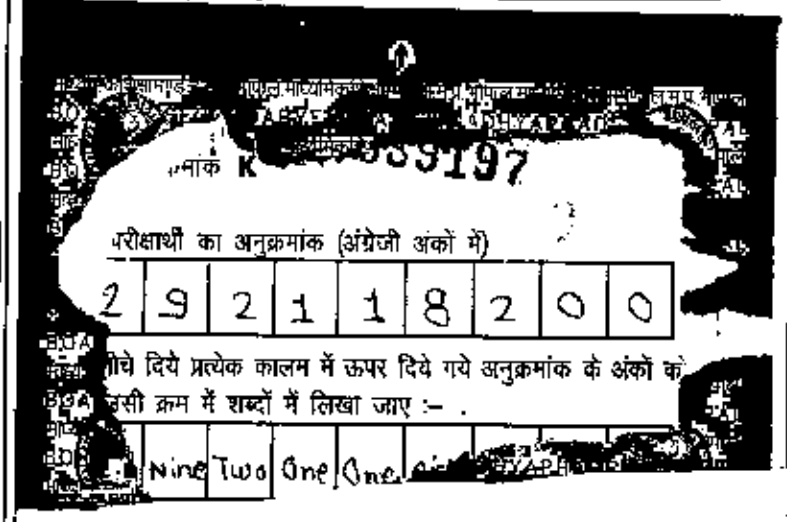

[redacted]

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	2	1	1	8	2	0	0

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

Nine	Two	One	One	[redacted]

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में ✗ अंकों में

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 2 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) Pratibha

नाम Pratibha Richhariya पद S.S.03

पता / संस्था Govt. Pri School Morgaon

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं। ✗

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

प्र	
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
कुल प्राप्तांक	

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की यथा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है ...के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) — हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) — हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 112 — दिनांक........ — दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

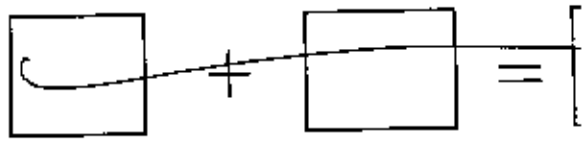

1 (i) सूरदास श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे।

(ii) "नर से नारायण" निबंध के लेखक श्री गुलाबरायजी हैं।

(iii) बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है।

(iv) आचार्य राम चन्द्र शुक्ल भारतेन्दु युग के निबन्धकार थे।

(v) अर्थ के आधार पर वाक्यों के आठ भेद होते हैं।

BSEMP

② (i) → (ख) जब बरामदे और शयनागार में फर्श बैठ गया।

(ii) → (क) ईश्वर की ओर

(iii) → (ख) रूपक

(ख) गोपाल सिंह नेपाली

(ख) कर्मधारय

1 (i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) असत्य

(4)
(i) यशोधरा ने बसन्त कहा है - सिद्धार्थ को
(ii) कन्याकुमारी नाम पड़ा है - पार्वती के नाम पर
(iii) अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद है - महात्मा गाँधी
(iv) अम्बुज - कमल
(v) मिसाइलें - पृथ्वी और अग्नि

(5)
(i) अवर्षा के कारण

(ii) सिरचन मानु को अपने हाथों से बनी शीतलपाटी और चिक देने रेलवे स्टेशन गया था।

(iii) बिन पानी के मोती, मनुष्य और आटा महत्वहीन हो जाते हैं।

(iv) यशोधरा राजकुमार सिद्धार्थ की ~~पत्नि थी~~ पत्नी थी।

हंसिनी ने राज काज प्रजा को सौंपने का सुझाव दिया।

B S E M P

अंक

(6) उत्तर- रहीम दास जी द्वारा लिखित दोहा में कवि कहते हैं कि जिस प्रकार से हार के मोतियों के टूट जाने से अर्थात बिखर जाने के कारण, हम उन्हें फिर से धागे में पिरोकर एक साथ बाँधे रखते हैं उसी प्रकार से हमें जब हमारे अपने मित्र, परिवार जन एवं अपने से जुड़े लोग रूठ जायें तो हमें उन्हें दुबारा और हर बार मना लेना चाहिए क्योंकि वे ही हमारे साथी होते हैं और हमारे सुखों के समय के साथ-साथ हमारे दुखों के समय में भी वे हमारा साथ देते हैं।

(7) उत्तर- कवि भूषण जी द्वारा रचित कविता वीर-गाथा में कवि कहते हैं कि छत्रसाल के बरछी नागिन के समान अपने शत्रुओं को चुन-चुनकर मारती है और उनका अन्त कर देती है। कवि कहते हैं कि छत्रसाल एक वीर योद्धा थे, उनकी भुजाओं को कवि ने शेषनाग की उपमा दी है और उनकी बरछी को उसे नागिन के समान कहा है जो कि अपने शत्रुओं को ढूँढ कर उनका अन्त कर देती है।

B S J M. P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग

उत्तर- (8) डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम द्वारा लिखित निबंध - "मेरे 'सपनों' का भारत" में लेखक कहते हैं कि आर्यभट्ट का गणित में विशेष योगदान है। आर्यभट्ट ने दशमलव की खोज की जिससे की कम्प्यूटर में भी विशेष वृद्धि हो पाई। आर्यभट्ट ने वृत्त और उसकी पारत के अनुपात को पाई के रूप में बताया और उसका मान दशमलव के बाद तीन संख्याओं तक उसका सही मान बताया। इस प्रकार आर्यभट्ट की गणित के क्षेत्र में विशेष देन है।

उत्तर-(9) सुभद्रा कुमारी चौहान जी द्वारा लिखित कहानी "तीन बच्चे" में लेखिका कहती हैं कि तीनों बच्चे जो उनके द्वार पर भीख माँगते-माँगते आये थे, उनकी स्थिति बहुत खराब थी। उनमें से बड़ी लड़की की आयु दस-बारह साल होगी, बीच की लड़की की उम्र सात-आठ और छोटे लड़के की उम्र पाँच साल होगी। उन तीनों के कपड़े फटे हुये थे और चिथड़े लटक रहे थे। उन तीनों ने काफी दिनों से नहाया

R S E M P

नहीं था जिसके कारण से उनके शरीर पर धूल की परत जम गई थी। वे तीनों काफी दिनों से भूखे भी थे और हल्के लड़के के गालों पर तो आँसुओं के निशान भी पड़ गये थे। वे तीनों एक गाँव में रहते थे अर्थात उन तीनों बच्चों की दशा अत्यन्त दयनीय थी।

BSEMP (

उत्तर (10) श्री देवेन्द्र दीपक जी द्वारा लिखित निबन्ध पुस्तक में कई लेखक कहते हैं कि नालन्दा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत का अत्यन्त विशाल विश्वविद्यालय था। यहाँ भारत के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के देशों से भी शिक्षा ग्रहण करने विद्यार्थी आया करते थे। यहाँ पर तीन विशाल पुस्तकालय थे — रत्न सागर, रत्नोदधि और रत्नरंजक। वहाँ पर एक साथ दस हजार विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे और उनको शिक्षा देने के लिए 1500 शिक्षक वहाँ थे। नालन्दा विश्वविद्यालय में अनेक प्रकार की विद्या प्राप्त की जाती थीं। वहाँ पर कलाशास्त्र, वाणिज्य, भूगोल, भौतिक, रसायन ज्ञान, नृत्य, अर्थशास्त्र, नक्षत्र ज्ञान आदि का

का ज्ञान नेहरू विश्वविद्यालय से प्राप्त किया जाता था।

उत्तर (11) सुभद्रा कुमारी चौहान जी द्वारा लिखित कहानी "तीन बच्चे" में जब लेखिका चौके का काम निपटाकर बाहर आने पर लेखिका ने देखा कि लेखिका के बच्चे अपने हिस्से पूरियाँ उन तीन गरीब बच्चों को दे रहे हैं, जो कि वहाँ भीख माँगते-माँगते आये थे। वे तीन (भिखारी) बच्चे पूरियाँ बड़े चाव से खा रहे थे। लेखिका के अपने बच्चों से पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि- खाने दो न माँ। देखो ये तीनों (भिखारी) कितने भूखे लग रहे हैं। पता नहीं बेचारों की माँ है भी या नहीं। यदि पूरियाँ कम हों तो हम अपनी हिस्से की पूरियाँ शाम को नाश्ते में नहीं लेंगे। उसके बाद लेखिका के द्वारा उन तीन भिखारी बच्चों से उनके बारे में पूछे जाने पर बताया कि वे उनके पिता पीकर रोज रात को आता था और माँ को पीटा करता था। इसलिए उसे पुलिस वालों ने जेल में बन्द कर दिया और उनकी माँ ने उन पुलिस

वालो का मारा था जो उसके पिता को लेने आये थे इसलिए उसकी माँ को भी वे जेल ले गये।

~~(13) उत्तर~~

(12) उत्तर द्विवेदी युग के निबन्धकार →

(1) महावीर प्रसाद द्विवेदी → कामायनी

(2) ~~सरस्वती ... → ...~~

बाबू गुलाबराय - ठुमरी ... साहित्य संदेश

उत्तर (13)

(अ) (क) फूट-फूट कर रोना

अर्थ → अत्यधिक दुख प्रकट करना

वाक्य शशांक परीक्षा में फेल हो जाने के कारण फूट-फूट कर रोने लगा।

(ग) हँसी-खेल न होना.

अर्थ आसान काम न होना

वाक्य - बारहवी कक्षा में पास होना हँसी-खेल नहीं है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(ब) (क) पुस्तक चुराई जाती है।
(ग) मीरा सुन्दर लड़की है।

(14) (अ) (ख) सूत → राहुल का सूत ही उसे आँखें दिखाता है।
सूत → मीना ने अपने ब्याज के पैसे सूत समेत वापिस ले लिए।

(ग) जाति → आजकल जाति-धर्म पर ज्यादा कोई ध्यान नहीं देता।
जाती → सीता स्कूल जाती है।

BSEMP

(ब) → (क) आप चुप रहिए।

) बच्चे भी घर की गंगा जी में कागज की नावें तैरा रहे थे और खुश हो रहे थे।

5) "प्रकृति पर विजय पाकर ही मनुष्य दम लेता है"।
उपर्युक्त उक्ति सही ही है। प्रकृति पर विजय प्राप्त करना मनुष्य की तो

आदत सी हो गई है। समुद्र की लहरों से डरे बिना ही मछुआरे समुद्र के बीच में जाल डालने का जोखिम उठाता है। आज मनुष्य प्रकृति को भी अपने अनुसार चला रहा है जहाँ वह चाहता है, वहीं वह डेम बनाकर नदियों और तालाबों का रुख बदल रहा है, हवाओं में अपने अनुसार तरंगों को लहरा रहा है और पृथ्वी पर अपने अनुसार ही सार्वजनिक स्थलों पर फैक्ट्रियों और कारखानों को खोल रहा है। अर्थात यह उचित है कि मनुष्य प्रकृति पर विजय प्राप्त करके ही दम लेता है।

B S F M P

उत्तर (16)

संकेत- विश्व एक - - - - - - - - इंजन है।

संदर्भ→ प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक मकरंद के भाग-2 के ~~पाठ~~ मेरे सपनों का भारत नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डा० ए.पी.जे अब्दुल कलाम हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने भारत को एक बौद्धिक समाज के रूप ढलते हुये जाने का भाव स्पष्ट किया है।

व्याख्या → लेखक कहते है कि विश्व एक बौद्धिक समाज मे ढल रहा है, जो कि ज्ञान के स्त्रोत और जनशक्ति की एकता को सूचित करता है। लेखक कहते है कि यह भारत के लिये अत्यन्त लाभदायक समय है जिसमें वह अपना विकास कर स्वयं को एक बौद्धिक शक्ति बना सकता है। लेखक कहते है कि हमें इन सब से पूर्व यह पता होना चाहिये कि हम किस स्थिति में है और हमें किस ओर जाना है अपने विकास और देश के उद्धार के लिये। लेखक कहते है कि ये सभी चीजें जानकर ही हम अपने देश को एक गतिशील ~~एवं~~ एवं विकास की ऊँचाईयों तक पहुंचा सकते है।

प्र-(17) संकेत - जैसा यह — — — — — — — जाता है।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक मकरंद भाग-2 के "हिमालय और हम" नामक कविता से लिया गया है। प्रस्तुत पद्यांश के कवि श्री ~~सिंह~~ गोपाल सिंह "नेपाली" जी है।

BSEMP

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने हिमालय की विशेषता के द्वारा हम भारतियों की ओर संकेत किया है।

व्याख्या - कवि गोपाल सिंह "नेपाली" जी कहते हैं कि जिस प्रकार से हिमालय अडिग, अविचल और अटल है, उसी प्रकार से हम भारतीय हैं, जो दृढ़ निश्चय एक बार कर लें, उस पर सदैव अडिग और अटल रहते हैं। जिस प्रकार से हिमालय धरती पर अमर है, उसी प्रकार हम भारतवासी भी अमर हैं, शाश्वत हैं। कवि कहते हैं कि कोई भी हमें नहीं ललकार सकता है और हिंसा से कोई नहीं मार सकता क्योंकि हम किसी को दुख देकर नहीं मारते हैं। कवि कहते हैं कि गंगा का पानी इतना पवित्र है कि जो कोई भी उसका पान करता है, वह हर मुसीबत की स्थिति का भी डटकर सामना करता है। कवि कहते हैं कि पर्वतों के राजा हिमालय का हम भारतवासियों के साथ कुछ ऐसा ही नाता है।

विशेष → (1) हिमालय की विशेषता का वर्णन है।
(2) अनुप्रास अलंकार है।
(3) भारत वासियों को हिमालय की तरह अडिग अविचल और अटल बताया गया है।

पृष्ठ के अंकों का योग

मो

(ग) गंगा नदी के पानी की विशेषता बताइए।

प्र० (18)

उत्तर (क) प्रस्तुत कविता में कवि ने वर्षा ऋतु में सर्वत्र फैली हुई हरियाली का वर्णन किया है। प्रत्येक जगह, वन-उपवन में फिर से हरियाली छा गई है। वन में मोर नाच रही है और सभी हँस-हँस कर आनन्द मना रहे हैं तथा यह सब मानो ऐसा लगता है कि आकाश से घनघोर घटाये इन्हें निहार रही है।

(ख) उक्त पंक्तियों में वर्षा ऋतु का वर्णन हुआ है।

(ग) उचित शीर्षक -

"वर्षा ऋतु का आगमन"

B
C
E
M
P

प्र - (19)

उत्तर (19)

(क) उचित शीर्षक –

"राष्ट्र एवं नागरिक"

(ख) क्रियान्वयन → कार्य में लगे हुये

राष्ट्रीय चरित्र → राष्ट्र का चरित्र अर्थात उसके नागरिकों का चरित्र

B S E M P

(ग) राष्ट्र का विकास उसके नागरिकों पर ही निर्भर करता है, कि वे कितने महान है और कितने कार्य में लगे हुये हैं, यदि प्रजा के लोगों का चरित्र अच्छा है तो उस राष्ट्र का चरित्र भी अच्छा ही होगा। अर्थात भारत के नागरिकों की महानता व उनके चरित्र के कारण ही भारत अपना मस्तक ऊँचा किये हुए है। अर्थात भारत एक प्रतिष्ठित देश है।

प्र० - 20 →

क

पृ-20

B
S
E
M
P

38, विलासनगर
भोपाल
20-3-09

आदरणीय पिताजी,

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आपकी कुशलता की कामना करता हूँ। आगे, जैसा आपको ज्ञात है कि मेरी बोर्ड परीक्षा चल रही है, जिनमें से ~~ब~~ तीन परीक्षा हो चुकी हैं और दो बाकी हैं। जो तीन परीक्षाएँ हो गई हैं वे तीनों ही अच्छी रहीं और उन तीनों विषयों में मुझे ~~अव्वल~~ हमेशा की तरह अव्वल आने की उम्मीद है। मेरी दो ~~और~~ शेष परीक्षाओं की तैयारी काफी अच्छी चल रही है और ~~आश~~ अपेक्षा करता हूँ कि वे भी अच्छी हो जावे।

घर में माँ को सादर चरण स्पर्श और नीलू को प्यार।

आपका आज्ञाकारी
पुत्र
अ, ब, स

पता :-
सिविल लाईन
मित्र कुंज
टीकमगढ़ (म० प्र०),

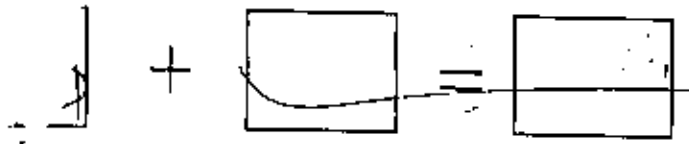

उ० (21) → निबन्ध - विज्ञान एवं कम्प्यूटर

विज्ञान एक ऐसी चीज है, जिसका निर्माण मनुष्य ने ही किया है। वह न तो अच्छी है और न ही बेकार। यदि उसका उपयोग अच्छे कार्य के लिये करो तो वह अच्छी है अर्थात सुख देने वाली है और यदि उसका उपयोग बुरे कार्यों के लिये करो तो वह अभिशाप के रूप में विशाल रूप धारण कर सकता है। विज्ञान का अभिप्राय है वि + ज्ञान अर्थात अधिक ज्ञान। ऐसा ज्ञान जिससे की हम सभी जीवन के हर क्षेत्र के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

विज्ञान ने ~~हमारी~~ हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। विज्ञान ने ही आज के युग को बटन युग बना दिया है। आज हम बटन दबाते ही रोशनी कर सकते है, बटन दबाते ही हवा कर सकते है। विज्ञान ने हर कार्य को इतना आसान बना दिया है कि ऐसे काम जिन्हें करने

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

जिन्हें करने में दिन महीने और साल लग सकते थे, विज्ञान ने ऐसे कार्यों को चुटकियों में कर देने वाले यंत्र आज तैयार कर दिया है। आज हम सुबह का नाश्ता दिल्ली में, दोपहर का खाना बम्बई में और रात को शयन लंदन में कर सकते हैं। विज्ञान ने दूरियों को तो सिर्फ एक नाम ही देकर रख दिया है।

विज्ञान की आज तक की सबसे बड़ी खोज, जिससे की मनुष्य सारे काम कर सकता है, वह है "कम्प्यूटर"। कम्प्यूटर एक ऐसा यंत्र है जिससे कि हम कोई भी असम्भव कार्य को सम्भव बना सकते हैं। कम्प्यूटर में सिलिकन चिप होती है जो कि उसे नियंत्रण करने में आवश्यक होती है। इसलिये कम्प्यूटर ही एक ऐसा यंत्र है जिससे की हम सारे असम्भव कार्य सम्भव कार्यों में परिवर्तित कर लेते हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

जहाँ पर विज्ञान ने हमें इतने अच्छी चीजे उपहार में दी हैं हमें बहुत अच्छे-2 उपहार दिया है वही विज्ञान ने एटम बम नामक ऐसी शक्ति दी है जिससे की सम्पूर्ण विनाश हो सकता है। उसका एक अंश भी सारी दुनिया को नष्ट कर सकता है। यदि हम विज्ञान का सदुपयोग करें तो वो हमारे लिये लाभदायक होगा पर यदि हम (उसका) इस्तमाल ऐसे कार्यों में करें जिससे कि बरबादी हो तो वह हमारे लिये बहुत खतरनाक साबित हो सकता है।

हमें विज्ञान पर एक मास्टर की तरह अधिकार जमाना चाहिये न कि एक नौकर की तरह नहीं। वह एक बुरी शक्ति के साथ हमारा अन्त कर सकती है। इसलिये हम उसका उपयोग अच्छे कार्यों में करना चाहिए न कि बुरे कार्यों में

उसका इस्तेमाल करना चाहिए।

हमें विज्ञान का उपयोग सद्कार्यों में करना चाहिये न कि बुरे कार्यों में, हमें विज्ञान को एक बहुत अच्छा रूप बनाना होगा जिस प्रकार से कम्प्यूटर का उपयोग सद्कार्य करके हम अपने देश को उन्नति के मार्ग तक पहुंचा सकते हैं इसलिए हमें विज्ञान का उपयोग सद्कार्यों एवं देश की उन्नति के लिए इस्तेमाल करना चाहिए ताकि देश की तरक्की हो और देश को हम उन ऊंचाईयों तक पहुंचा सकें जिससे कि सारे विश्व में हमारा देश सर्वत्र विजयी हो। और विज्ञान का इस्तेमाल सद्कार्यों में करना चाहिये और विज्ञान एक मास्टर नहीं हमें विज्ञान एक नौकर के रूप में चाहिये।

BSEMP

इसलिये कहा गया है :-

विनय एक बेकार मास्टर है,
परन्तु एक अच्छा सेवक।

x x x

Thanks for the marks

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग